चँद्रप्रभा

The light of the moon

नूपुर

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Noopur 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRoseONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7542-227-3

Cover design: Noopur
Typesetting: Namrata Saini

First Edition: May 2026

नूपुर का जन्म उत्तर प्रदेश के एक सम्भ्रान्त शिक्षित परिवार में हुआ। इन्होंने अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य में स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त की है। विवाहोपरान्त यह दिल्ली स्थानांतरित हो गयीं। दिल्ली प्रशासन के विद्यालयों में यह 32 वर्ष अंग्रेजी की अध्यापिका के पद पर कार्यरत रहीं। बचपन से ही इन्हें पुस्तकें पढ़ने व कविताएँ लिखने का शौक रहा है। 2024 में शिक्षा विभाग से सेवानिवृत्ति के पश्चात् बचपन से अब तक की सभी कविताओं को एकत्रित कर एक पुस्तक रूप देने का विचार करा। यह एक सकारात्मक सोच का व्यक्तित्व रखती हैं। इनकी अधिकतर कविताएँ सकारात्मक सोच से अन्त करती हैं।

इसके साथ ही इन्हें चित्रकारी व पेंटिंग का भी शौक रहा है। संगीत में इनकी विशेष रुचि रही है। वर्तमान में यह शास्त्रीय संगीत की विधिवत् शिक्षा प्राप्त करने में प्रयत्नशील हैं।

मेरे हाथ में मेरी कविताओं का सम्पूर्ण संकलन है और मुझे बहुत प्रसन्नता है इसे आप सब के समक्ष प्रस्तुत करते हुए।

हर व्यक्ति का हृदय अनेक प्रकार की भावनाओं से भरा होता है। बहुत बार हम अपनी भावनाओं को व्यक्त भी नहीं कर पाते। कभी कभी हमें एक माध्यम मिल जाता है अभिव्यक्ति का। ऐसा ही माध्यम कविता के रूप में मुझे मिल गया। जब से मुझे याद है तब से मेरे विचार और अहसास मेरे भीतर से उमड़ घुमड़ कर स्वतः ही कागज पर उतर आते रहे हैं। बहुत पुरानी लिखी कविताओं में से भी मैंने कुछ चुन कर इस पुस्तक में सम्मिलित करी हैं। प्रत्येक कविता के साथ उसके जन्म की तिथि भी है। कारण ?..... समय का गुज़रना...... लिखने वाली युवती की उम्र...... किस उम्र में किस प्रकार की सोच होती है, और कैसे धीरे धीरे लेखन शैली में भी परिवर्तन आता है। बचपन का बचपना भी यहीं है और अनुभव के साथ आयी परिपक्वता भी प्रस्तुत है। हर उम्र के अनुभव भी अलग ही होते हैं। एक युवती, एक स्त्री, एक व्यक्तित्व और कुछ दार्शनिकता। कभी सुख भी है, कभी दुख भी है। बस यही यात्रा हैं ये कविताएँ। यह वो जीवन यात्रा है जिसे सब पहचानते हैं।

तो बस फिर मेरे नमस्कार के साथ इस पुस्तक को स्वीकार करें।

-नूपुर

Contents

भाग - 1 परिपक्वता की ओर 1

कूका करती थी कोकिल एक 3

छोटे जीवन, नन्हें युद्ध 5

बीत गया बचपन 7

स्वर्ग उतर आया 8

ख़यालों में गिनती किये जा रहे हैं 10

ऐ ख़ुदा 12

बेटियों से सजा घर (मेरी बेटियों को समर्पित) 13

ये कैसी कशमकश 16

हुनर की बात 17

जिन्हें अपना मैं कह पाऊं 19

धूप 20

आती-जाती तितलियाँ 21

भूल जा, आगे बढ़ 23

समुन्दर पर बाँध 25

बच्चों के नखरे 26

बस एक ज़िन्दगी (कोविड के बाद) 27

दो कविताएं, एक भाव 28

यूँ ही - छुटपुट 30

यूँ लिख लिख कर 31

बहुत सोचता था 32

नमन (हर बहादुर सैनिक के माता-पिता को समर्पित) 33

सदा हवा के साथ 34

क्या मांगूँ ? 35
कौन ? मैं ? हाँ, तुम ! 36
अब नहीं ! 37

भाग - 2 कुछ समझदारी कुछ बचपना 39

पृथ्वी अम्बर 41
बादल 43
गाती करूणा राग 46
मानव होकर 48
क्यूँ ? 50
ये चाँद आधा 51
व्यर्थ 52
साथी 53
सावन 54
निरुद्देश्य 55

Part 2-(B) From the Pen of a Teenager 57

True Friends 59
Science 60
How Long? 62
Poor Husband 64
Comes 66
Great Happiness 67
Evil 68
Let Me Listen 70
All Around 71
If All the Days Were...... 73
To Tree 74
A New World 75
Shall I Go? 77
On The Seashore 79
At Midnight 81

All Important 85
I Apologize 87
And Now I Go (Dedicated to my college and teachers) . 89
The incomplete story of..... The Haunted House 92
Wounded... 96
For A Smile.. 97
There Are Faces I Love 100
Love Flower.. 102
Tear of Broken Hopes... 104
Had I been Keats.. 106

भाग - 1
परिपक्वता की ओर

कूका करती थी कोकिल एक

कूका करती थी कोकिल एक
नन्हा सा पंछी गीत अनेक
भोर से साँझ, निशा, दिवस
फुदक फुदक कर विहँस विहँस
मुझसे हो गयी थी मित्रता
बातें होती थीं यदा कदा
कहती थी मुझको कार्य यही
संगीत बिना व्यवहार नहीं
किंचित विचार भी करूँ अगर
तो इन गीतों में रच बस कर
धरती के अंदर कविता भरूँ
गीतों से गुँजित स्वर्ग करूँ
वायु की लय पर नृत्यु करूं
अरि की लहरों से शब्द रचूँ
नित नवीन संगीत मैं पाऊँ
मर कर फिर कोकिल बन जाऊँ
मित्र मेरे प्रार्थना करो
कण्ठ ध्वनि यह क्षीण न हो।
पर आज हुए हैं दिवस अनेक
कोकिल भूली संगीत विवेक
प्रात से रात, रात से प्रात
मैं जोहूँ उसके स्वर की बाट

हृदय व्यथित वाचाल हुआ
क्या मित्र का मेरी काल हुआ ?
नयन नीर इन्द्रधनुषी हास
यूँ कोयल आयी मेरे पास
सावन में प्रिय से मिली अरे
उसने छीने हैं गीत मेरे
करने लगे जब नयन बात
मैं मूकता को हो गयी प्राप्त।

09-07-1987

छोटे जीवन, नन्हें युद्ध

पग पग का साथ दे कर भी
स्वयं टूट कर बिखर गयी
ना कर मतभेद घटा से
ऐ बिजली तू ही गिरेगी।

अपना उस्तित्व कभी मुझे
यह यूँ बनाने देते नहीं,
जब तक टूटी बिखरी नहीं
बादल थी मैं दामिनी नहीं।

मत लड़, मत लड़ इस हवा से
ऐ पुष्प तू ही बिखरेगा
जैसे जैसे पवन चले
ना चला तो समझो बिछड़ गया।

अपना रूप, अपनी सुगन्ध
अपनी इच्छाएँ लाया हूँ
केवल हवा की इच्छा पर
झूमा तो फिर मैं क्या जिया।

बदली से हो झगड़ा कैसा
वह ही तो मेरी जननी है
उसको छोड़ा तो जैसे कुछ
मेरा ही पीछे छूट गया।

यह कैसा कोमल बंधन है
हवाओं से इन फूलों का
झूमा तो अपनी इच्छा से
आँसू में हवा के खो गया।

छोटे छोटे से जीवन हैं
नन्हें नन्हें से युद्ध
पर इन युद्धों के पीछे
कितने कितने मनसूबे।

इस दुनिया से लड़ने में
अपने से कितना लड़ते हैं
अपना अस्तित्व बनाने में
क्या पाते हैं क्या खोते हैं।

हम थे और भावना थी
तब कितना भोला हृदय था
अब केवल मैं ही मैं हूँ
न हृदय है, न भाव।

12-06-1989

बीत गया बचपन

काश कि मैं अपने बचपन में लौट पाती
गुड़ियों और गुड्डों से सुन्दर घर सजाती।
माँ मुझे बुलाती थाली में खाना ले कर
मैं इधर उधर छुपती माँ को बहुत सताती।
बापू के थक कर दफ़्तर से लौटने पर
मूढ़े पर चढ़ कर मैं उनका सिर दबाती।
होठों को दबा कर यूँ गुनगुनाना न पड़ता
भैया से खूब लड़ती, जी खोल कर चिल्लाती।
सारी दुपहरी मिट्टी में खेल कर थक कर
जब साँझ होती माँ की गोदी में सो जाती।
गुड़ियों के खेल में मैं सदा माँ बनी थी
माँ बन कर आज मुझको गुड़ियाँ हैं याद आती।
पर चलूँ अब सपनों में समय ना गवाऊँ
मेरी बगल में मेरी लाडली सो गयी है
मौका मिला है उठ कर कुछ काम ही निबटाऊँ।

24-07-1989

स्वर्ग उतर आया

ये ठंडी-ठंडी हवा
ये खुशबू वाली बारिश
ये घनी घास का बगीचा
ये पेड़ों की हरियाली
ये छत से लटका झूला
झूले पे झूमती मैं !

ये हरी-हरी मोरपंखी
पे उड़ती पीली तितली
वो नीली सी दीवार पर
धुला सफ़ेद बगूला
ये अनथक कहती बिटिया
और बिन कह सुनती मैं !

बरखा में नाचता मोर
हैरत से देखते पंछी
इक चिड़िया पंख भिगोती
इक इतरा कर उड़ जाती
वो पानी पीता फूल
और मन में हँसती मैं !

तारों सी चमकती बूंदें
परियों से उड़ते बादल
अप्सरा सी नाचती बिजली
फिर गड़-गड़ बजती ताली
यह इंद्रलोक का दृश्य
और दर्शन करती मैं !

23-07-1997

ख़यालों में गिनती किये जा रहे हैं

कितनी चाहतें ले कर यूँ ही चले जा रहे हैं
किसे पकड़ें, किसे छोड़ें,
किसे रक्खें किसे तोड़ें
बक्सों में चाहतों को बंद करे जा रहे हैं।

कुछ तो तालों में बंद सी हो गयी हैं
कुछ की तो हम से ताली भी खो गयी हैं
किसे समझें किसे खोलें
कहाँ ढूँढें किसे बोलें
गुच्छे में चाभियों को भरे जा रहे हैं।

हवा में खुशबू की तरह सहलाती हुई
कुछ हँसाती हुई कुछ रुलाती हुई
किसे सींचें, किसे गुड़ दें (गुड़ाई करना)
किसे दिल में कहीं जड़ लें
छुपा के दुनिया से लिये जा रहे हैं।

धुंधला के पलकों में कहीं छिप गयी हैं
छूट के हाथों से कहीं टिक गयी हैं
कैसी चाबी, कैसे गुच्छे
कैसी ख़ुशबू कैसे सपने
बक्से ही ख़ाली हुए जा रहे हैं।

सोचा था कुछ ऐसे, पाया है कुछ वैसे
चाहा ही क्यूँ था होना था जब जैसे
कितनी छूटीं कितनी टूटीं
कितनी हँस दीं कितनी रूठीं
ख़यालों में गिनती किये जा रहे हैं।

थक गये हैं चाहतों का बोझ ढोते ढोते
ये ना होतीं तो आज हम भी पंछी होते
यहीं भूलें ? यहीं धर दें ?
दिल के टुकड़े क्यूं न कर दें
दिल पर ये बोझ लिये जा रहे हैं।

पूरी भी करी हैं तूने कितनी ही चाहें
क़दम उठाया तो आ गयीं कितनी ही राहें
यहाँ रखे दें, वहाँ चल दें
कहाँ देखें? कहाँ चल दें ?
इबादत तेरी हम करे जा रहे हैं
इबादत तेरी हम करे जा रहे हैं।

13-06-2014

ऐ ख़ुदा

मेरे जज़्बातों से इतना ना खेल ऐ ख़ुदा
जानती हूँ तेरा खिलौना हूँ मगर
खेलने वालों को मोहरों से भी प्यार होता है
तू कैसा खिलाड़ी है, तू कैसा ख़ुदा है?

इस खेल मे जीत तेरी होगी, मैं तो खिलाड़ी नहीं
दोनों ओर की चालें तू ही चल रहा है
इन्तज़ार करती हूँ तेरी अगली चाल का सब्र से
या तोड़ के फेंक दे, या आ के संभाल ले मुझको।

30-06-2014

बेटियों से सजा घर
(मेरी बेटियों को समर्पित)

1.
मेरी कंजकें तुम से हैं

होली दीवाली की रौनकें तुम से हैं
मेरे घर की सजावटें तुम से हैं
हँसी की आवाज़ें जो मेरी माँ की गूंजा करती थीं
अब मेरी सारी खिलखिलाहटें तुम से हैं।

माँ माँ करती मेरी आँखें ढूंढा करती थीं
अब मुझे ढूंढती आँखें तुम से हैं
गोदी में सिर रखने का सुकून हुआ करता था
प्यार भरे सपनों की वो दुनिया अब तुमसे है।

घर के आगे रंगोली खूब सजायी मैंने
दीपक की लौ की झिलमिलाहटें तुम से हैं
गुंझिया चुरा कर खाते थे बचपन में
व्यंजन बनाने की चाहतें अब तुम से हैं।

रंगों की फुहार तुम फुलझड़ियों की चमकार हो
मेरा त्योहार, प्यार, दुलार, तुमसे हैं
मेरे घर की रौनकें, गप्पें, ठहाके
नृत्य और संगीत की लयकार अब तुमसे है।

डाँटना, डपटना, दुलराना, मनाना
सजना, संवरना, इतराना, बल खाना
तितलियों का उड़ना, चिड़ियों का चहचहाना
हर दिन का गुस्सा और प्यार सब तुमसे है।

मेरी लाडलियों यूँ ही हँसना, खिलखिलाना
आसमान में उड़ना, आँगन में चहचहाना
ये प्यारे अनुभव तुम्हारा भी नसीब हों
मेरे जीवन की दुआएँ सब तुमसे हैं।

22-03-2016

2.

सागर लहरों पर नृत्य करती तुम चंद्रप्रभा हो
बरखा से पहले की गुञ्जन तुम कोयलिया हो
बरबस ही पलकों से बह जाये वो गीत हो तुम
मुझे मेरा आप दिखाती तुम परछाइयाँ हो।

मेरे लिये एक उत्सव हो दीपावली हो तुम
तुम लक्ष्मी, तुम सरस्वती, श्रद्धाञ्जलि हो तुम
सितारों को देख कर उभरी कोई अभिलाषा यदि
तो मेरे आँगन में उतरी तारावली हो तुम।

ऊँची हो उड़ान तुम्हारी तुम्हारे मंगल तक
दीप्तिमान हो पथ तुम्हारा सितारों चंद्रमा तक
ज्ञान मोती बनने का जहाँ हो रहा वितरित
राह सागर में से हो तुम्हारी उन सीपियों तक।

31-07-2023

ये कैसी कशमकश

रात गुज़री पूरी सुबह होने के इन्तज़ार में,
सुबह हुई तो रात के साथी याद आने लगे।
एक अंधेरा ही था जब कुछ किरदार नज़र आये,
रोशनी में तो सभी के चेहरे चमचमाने लगे।
घबरा क्यूँ रहे थे दोस्तों में थे हम तो,
मंज़िल मिली तो दोस्त कम नज़र आने लगे।
थोड़ा सा चल कर पीछे मुड़ कर जो देखा,
तो सारे उजाले वहीं नज़र आने लगे।
गुमशुदगी सा अहसास हो रहा है खुद को,
कहीं और जा रहे थे, कहीं और जाने लगे।
हर लम्हा सुख का खुशी का था अब तक भी,
हम क्यूं बेकार ही दुख गिनवाने लगे।
रात है तो रात ही का मज़ा ले लें आओ,
इंतज़ार में क्यूं इन पलों को गँवाने लगे।
कौन सी खुशी है जिस का इंतज़ार है बोलो ?
क्यूँ हम दिल को यूँ भरमाने लगे ?
खुश होना है तो आज ही खुश हो लो
किसने जाना है अब कल क्या आने लगे।
किसने जाना है अब कल क्या आने लगे ॥

2017

हुनर की बात

बिखरी पड़ी है सुन्दरता, नज़र की बात है
धुंध आती है या जाती है, सहर की बात है।

चाहो तो समेट लो या जाने दो यूँ ही,
क्या लाती है ले जाती है, लहर की बात है।

हँस लो, हँसा लो, प्यार बिखेर लो,
तुम ग़म में भी खुश हो, हुनर की बात है।

जीवन तो सभी का ऊपर नीचे है,
तुम तैर कर गुज़ार लो जिगर की बात है।

देखा, सुना, पाया है बहुत कुछ,
सीखा मगर क्या, असर की बात है।

कोई परेशानी हमेशा तो नहीं रहती,
फिर क्या हैरानी, फ़िकर की बात है?

भोले चेहरों से छलकता प्यार देखा है मैंने,
कितना मैं समेट लूँ, कदर की बात है।

फूटा कलश उसका और बिखर गया,
अब ज़मीं, आसमाँ, दिल में बसर की बात है॥

06-12-2017

जिन्हें अपना मैं कह पाऊं

जिन्हें अपना मैं कह पाऊँ कहाँ रहते हैं ऐसे लोग ?
मुझे अपना समझ पाएँ कहाँ रहते हैं ऐसे लोग ?
मैं जिनके साथ चल पाऊँ, जो मेरे साथ चल पाएँ,
मुझे आ कर न जाने दें, कहाँ रहते हैं ऐसे लोग ?

मेरी गर्दन नहीं काटी, मुझे खंजर नहीं मारा,
मिले वो प्यार से मुझ से, रुखाई से नहीं मारा,
हँसी में भी वफ़ा ना थी, अदा में भी वफ़ा ना थी,
मेरे सब राज़ ले कर फिर, जफ़ाओं से मुझे मारा।

न होतीं ये जफ़ाएँ तो ये बेचैनी कहाँ होती,
क़लम से कागज़ों पर ये लिखी बातें कहाँ होतीं,
मुझे तो शुक्र है तेरे सभी झूठे भरोसों का,
ना होते वो जो जीवन में तो ज़िन्दा मैं कहाँ होती।

समझ कर चाल दुनिया की कदम अपना उठाना है,
तेरा हर वार ले कर भी तुझे अपना बनाना है,
न तुझ में ज़ोर है इतना, न मैं कमज़ोर हूँ इतनी
कि ज़िन्दा हो के खुद, तुझको भी अब ज़िन्दा बनाना है।

25-12-2017

धूप

धूप का एक अलग सा ही मज़ा रहा है सदा
गर्मियों की सुबह का उगता हुआ सूरज
सवेरे का संदेशा लाती हुई किरणें
सर्दियों की दोपहर में धूप का आनन्द
बारिश के बाद खिलती धूप की रोशनी
सूरजमुखी सी धूप को ढूंढती निगाहें
धूप का एक अलग सा ही मज़ा रहा है सदा।

पर धूप का असली अहसास तो तब हुआ
जब सिर के ऊपर से साये हटने लगे
गर्मियों की सुबह भी तेज़ लगने लगी
सर्दियों की दोपहर भी खुश्क हो गयी
बरसात के बाद की धूप में नमी थी
सायों को ढूंढते धूप में निकल पड़े।

पेड़ की बेल अब खुद पेड़ बन गयी है
कितनी लताएं उससे लिपट कर बढ़ चली हैं
बाहें फैला कर साया बन गया है पेड़ अब
धूप में आराम से खेल रहा है कोई अब
धूप का वो अलग सा मज़ा ले रहा है कोई
धूप का वो अलग सा मज़ा ले रहा है कोई ।।

06-12-2019

आती-जाती तितलियाँ

मैंने देखी हैं हवा में उड़ती हुई तितलियाँ
खिलखिलाती हुई, नाचती हुई, गाती हुई तितलियाँ
मुझसे बड़ी तितलियाँ, मुझसे छोटी तितलियाँ
हश्र मैंने सब का देखा
झूमीं, नाचीं, गायीं जल कर सब खाक हो गयीं
अपनी ख़ुशबू, अपनी रंगत
अपना नृत्य, अपना संगीत
सब साथ लायीं, साथ ले गयीं
पर दिल में मेरे आज भी नाचती हैं वो तितलियाँ।

देखूं छोटी तितलियाँ अब उड़ कर कहाँ जाती हैं
क्या वो दुनिया को देती हैं, क्या दुनिया से पाती हैं
और नयी भी आ रही हैं खूबसूरत गलियों से गुज़रती हुई
जाते हुए समय के साथ कहाँ जाती हैं ये तितलियाँ

सपनों की दुनिया से ये बाहर आ जायें
अपने जीवन में भी रंग बिखेर पायें
उड़ान तो भरें पर पैर फूलों पर टिके हों
खुशबू से सराबोर खुद हो जायें तितलियाँ

यथार्थ से सामना हो जाये जब इनका
फिर भी मुस्कुरा कर गुनगुना पायें तितलियाँ
असली तो तभी मानू इनकी उड़ान को
आसमाँ छू कर ज़मीं पर उतर आयें तितलियाँ
हँस-हँस कर सबको छूते हुए गुज़रें और
दास्तान खुश होकर सुनायें ये तितलियाँ।

13-10-2018

भूल जा, आगे बढ़

भूल जा, आगे बढ़, चलती चल
उनकी पर्वाह न कर ऐ दोस्त
जिन्हें तेरी पर्वाह नहीं
तू सक्षम है, तू समर्थ है
तू हिम्मत है, तू औरत है।
वो न समझें तुझे जाने दे
वो न पूछें तुझे, जाने दे
तू आगे बढ़ दिखा दे उन्हें
प्यार है तो प्यार है
जंग है तो जंग है।

बिहारी की नायिका न बन
तू उसकी मीरा न बन
जो न बन पाया कृष्ण
तू उसकी उर्मिला न बन
जो न बन पाया लक्ष्मण
उसकी ज़रूरत क्यूं है तुझे
जिसे तेरी ज़रूरत नहीं?
उससे प्यार क्यूँ है तुझे
जिसे तुझ से मुहब्बत नहीं ?

वो अपना कर्त्तव्य निभा रहा है
तू अपना कर्त्तव्य निभाती चल
वो अपना जीवन जी रहा है
तू अपना जीवन जीती चल।

वो ऊपर से देखता है तेरे कर्म को
वो ऊपर से देखता है तेरे धर्म को
तू उसकी कुछ चिन्ता न कर
जिसे तेरी कुछ चिन्ता नहीं
मर्यादा तू अपनी रखती चल
वो चाहे मर्यादा पुरुषोत्तम न हो
तू राज परिवार संभालती चल
वो चाहे कुँवर सिद्धार्थ न हो।

तुझमें वो साहस, वो बल है
जो हर पुरुष पे भारी है
तू सक्षम है, तू समर्थ है
तू हिम्मत है, तू नारी है
तू हिम्मत है, तू नारी है।

22-03-2019

समुन्दर पर बाँध

समुन्दर पर बाँध बनाया नहीं जाता
लहरों को बंधक बनाया नहीं जाता
तूफाँ कोई अभी बड़ा आया नहीं है
ऊँची लहरों से यूँ घबराया नहीं जाता।

नाँव को अपनी मज़बूत बना लो
पतवार चौड़ी हाथों में अपने उठा लो
खेलना तो ठीक था पर ये समझ लो
कागज़ की नाँव से पार उतरा नहीं जाता।

घबरा रहा हो मन कोई बात नहीं है
अच्छा जिया मैंने पश्चात्ताप नहीं है
फिर भी जो डोले नैया तो क्या कर सकेगा तू
भगवान की मर्ज़ी को ठुकराया नहीं जाता।

02-06-2019

बच्चों के नखरे

बहुत नाराज़ होते हैं नखरे दिखाते हैं हमें
हम से कहते हैं हम उन्हें पूछते बहुत हैं।

दिखाते ऐसे हैं कि उन्हें पर्वाह नहीं कोई
दिल में खुश हैं कि हम उन्हें पूछते बहुत हैं।

वो कुछ पूछते नहीं बात भी नहीं करते हमसे
बात इतनी सी है हम उन्हें पूछते बहुत हैं।

हम न पूछें तो वो तड़प जाते हैं बेचैन हो कर
हम मजबूर हो कर उन्हें पूछते बहुत हैं।

वो जान हैं हमारी ये जानते हैं वो
हम जान पर खेल कर उन्हें पूछते बहुत हैं।

चलो न पूछेंगे अब मान ली गलती अपनी
फिर न कहना क्यूँ नहीं पूछते बहुत हैं।

02-03-2020

बस एक ज़िन्दगी
(कोविड के बाद)

मौत पास आयी तो ज़िन्दगी साथ आ गयी है
बिखरी पड़ी दुनिया मेरे हाथ आ गयी है।
कोई कहीं, कोई कहीं व्यस्त थे अपने में,
साथ मिल कर जीने की बुनियाद आ गयी है।
कमज़ोर नहीं हैं हम ये जान लिया हमने,
शक्ति हमारे आस पास अपने आप आ गयी है।
तुझे याद तो किया प्रभु सदा अपने मन में,
तू साथ है हमारे अब ये आस आ गयी है।
स्वयं को संभाल लें इतना समय नहीं था,
दूसरों को संभालें अब ये बात आ गयी है।
प्रकृति खुद को संभाल कर हमें संभाल लेगी
पंछियों के स्वर में ये आवाज़ आ गयी है।
माँ भी सज़ा देती है बच्चों को सुधारने को,
तूने सज़ा दी है, हमें रास आ गयी है।
रास्ता दिखाता चल हम चलते रहेंगे उस पर,
अब तुझ पर ही ये सारी बात आ गयी है।
बिखरी पड़ी दुनिया मेरे हाथ आ गयी है
मौत पास आयी तो ज़िन्दगी साथ आ गयी है।

12-05-2020

दो कविताएं, एक भाव

दो कविताएँ, एक भाव है। इस कविता को मैंने दो बार में लिखा। पहली बार जो भाव हृदय में उभरे वैसे ही कागज़ पर उतार दिये। फिर दोबारा प्रयत्न कर के शुद्ध हिन्दी में चेष्टापूर्वक लिखा। दोनों यहाँ प्रस्तुत हैं।

1.

लिखा नहीं है कुछ भी बहुत समय से कलम ने।
दिल सुकून से भरा है अब दर्द कहाँ से लायें॥
मालूम है दोस्तों की खुशी है हमारी खुशी से।
जो हमसे खुश न हों वो खुदगर्ज़ कहाँ से लायें॥
समय ने समय को भुला दिया समय से।
शायर बना दे अब वो पल कहाँ से लायें॥
आलम तो देखो ज़रा हमारी बेबसी का।
कोशिश कर रहे हैं पर ग़ज़ल कहाँ से लायें॥
कोई ज़िद तो नहीं नाखुश रहने की हमें।
जब है ही नहीं तो फिर ग़म कहाँ से लायें॥

2.

क्या ये भावशून्यता है या अभाव है दर्द का
निरत प्रयास से भी अब कुछ लिखा जाता नहीं
समय ने समय के घाव सारे भर दिये
ढूँढने से भी दुख का पल कोई पाता नहीं।
अवसाद से क्या कवि का नाता अटूट है?
क्या कवि के लेख का सुख से कोई नाता नहीं?
मन प्रफुल्लित, तन तरंगित, पाँव थिरकन से भरे
ऐसे उन्मादों के गीतों का कोई श्रोता नहीं?
सब व्यथायें भूल कर सुख लहरों में जो बहे
अथक मनन उपरान्त भी किंचित कोई पाता नहीं॥

08-07-2020

यूँ ही - छुटपुट

गुज़री कल मंदिर के आगे से आरती के समय
हज़ारों घंटियाँ दिल में तेरे नाम की बजने लगीं।

अचानक कभी कभी चौंक कर उठ जाती हूँ यूँ ही
तुमने तो पुकारा नहीं मेरा नाम क्यूँ सुनाई दिया मुझको

कोई तो है जो मुझे याद करता है कहीं
खुशबू हवा में मेरी जैसी यूँ ही नहीं फैली।

तुम हमें याद करो या न करो तुम्हारी मर्ज़ी
हम तुम्हें याद करें या न करें हमारी मर्ज़ी।

कोशिश तो बहुत करी कि याद न करूँ तुमको
ज़रूरी तो नहीं कि हर कोशिश मुकम्मल हो जाये

सच कहते हैं लोग दिल में स्वर्ग बसता है
वर्ना जो स्वर्ग चले गये वो दिल में कैसे दिखते हैं ?

2019

यूँ लिख लिख कर

यूँ लिख लिख कर मेरा नाम मिटा देते हैं
सुबह लिखते हैं और शाम मिटा देते हैं।
उनसे पूछो ये चितवन तिरछी क्यूं है
यूँ ही देखोगे तो हम जाम हटा देते हैं।
यूँ रुसवा न रहा करो मेरी जान तुम
इन्तज़ार की हम हर शाम हटा देते हैं।
तुमसे प्यार करें कोई और काम न हो
ज़िन्दगी के बाकी सब ख्वाब मिटा देते हैं।
वो सुनते ही नहीं अब मेरी बात कोई
मौका मिलते ही वो हालात मिटा देते हैं।
लो कर लो क़त्ल शौक से हमारा
हम भी हक़ीम तमाम हटा देते हैं।

15-10-2019

बहुत सोचता था

बहुत सोचता था होशियार हो गया हूँ मैं
उसने दो जमा दो दिये मैं पाँच न कर सका।
समझ समझ कर समझा उसके हर खेल को
पासे थे हाथ में पर मैं चाल न चल सका।
फिर उधेड़ कर फिर-फिर बुना फिर भी
ज़िन्दगी को फिर से सलीकेवार न कर सका।
मांगना तो था हाथ उठा कर बहुत कुछ
'तेरी मर्ज़ी' के सिवा कुछ गुहार न कर सका।

15-12-2019

नमन

(हर बहादुर सैनिक के माता-पिता को समर्पित)

गले से लगा लूँ दिल बहुत ललचाया होगा
कहीं से तो आ जा तड़प कर बुलाया होगा
उसका सारा बचपन आँखों में लहराया होगा।
ठुमक चलत गा कर उंगली पकड़ चलाया था
सारी सारी रात उसे गोद में घुमाया था
पूरी दोपहर उसे प्यार से पढ़ाया था
उसके भविष्य की चिंता में नींदों को उड़ाया था
सीने से चिपका कर बुरी नज़र से बचाया था
उसके आँसुओं से अपनी आँखों को भरा पाया था
ऐसा सुंदर जवान बेटा कैसे उसने गँवाया होगा।
गोली खा कर सो गया उसे जब सुनाया होगा
माँ का दिल है, सौ बार गश खाया होगा
अपने आँसू पोंछ पिता ने उसे उठाया होगा
कहाँ से वो इतना सख़्त हृदय लाया होगा
भारत माता की जय बोल कर हो गया शहीद
अपना पिता भी उसे बहुत याद आया होगा।
इस ऋण से उऋण हो पायेगा क्या देश कभी ?
तुम्हारे हँसने की कीमत चुका रहा है वहाँ कोई।
नमन नमन नमन करने से कुछ नहीं होगा
तुमसे भी कुछ उम्मीद लगा रहा है वहाँ कोई ॥

18-11-2023

सदा हवा के साथ

सदा हवा के साथ बहो ये तो कोई बात नहीं
पर हवा का विरोध ही करो ये भी तो कोई बात नहीं
कोई भी राह कहाँ पहुँचेगी किस को पता है?
पर कठिन डगर ही चुनो ये तो कोई बात नहीं
क्यूं सरलता से जीवन को जी नहीं सकते ?
सरल है तो व्यर्थ है? ये तो कोई बात नहीं
न जाने कब आया था अचानक ही चला जाऊँगा
मेरे हाथ में कुछ भी नहीं ये तो कोई बात नहीं
इक दिन मैं मर जाऊँगा फिर जाने क्या होगा पीछे
यो सोच-सोच मर जाऊँ ये भी तो कोई बात नहीं।
इस बीच क्यूँ न अमर जैसा जिया जाये
जो भी हो रहा है उसे भरपूर किया जाये
जीना तो मेरे हाथ में है ये ही तो कोई बात है
चुनना भी मेरे हाथ में है ये भी कुछ बात है
और बात तो ये भी है कि चलो कोई बात नहीं
पर सच में कोई बात नहीं?
क्या सच में कोई बात नहीं?
ये कोई बात नहीं !!!!

03-06-2024

क्या मांगूँ ?

दादी की कहानियों की शिक्षा
पिता के हृदय की सद्भावना
माँ की सिखाई समझदारी
भाइयों का निश्छल प्रेम
और एक तुम्हारा साथ!
अब और प्रभु से मैं क्या मांगूँ ?

कहते हैं न, बिन मांगे मोती मिले
तो मैं सहस्त्र मोतियों से सजी
प्रभु चरणों में सिर झुकाए
बच्चों के लिये भी सुख मांगती हूँ।
अब और प्रभु से मैं क्या मांगूँ ?

25-08-2024

कौन ? मैं ? हाँ, तुम !

तुम ही कबीर हो, तुम ही रसखान हो
भीतर झाँक कर तो देखो, तुम ही ज्ञान हो
तुम हो तो सब है, तुम नहीं तो शून्य
तुम सारी सृष्टि हो, तुम ब्रह्माण्ड हो।
कभी मतिहीन, कभी ज्ञानी हो तुम
कभी अंजान हो, कभी बुद्धिमान हो।
सब कुछ भूल कर दो क्षण सोचो
हृदय बतायेगा तुम कितने महान हो।
प्रभु साथ थे तुम्हारे कितनी ही बार
उसने बताया है तुम उसकी संतान हो।
स्वयं को समझ लो, बहुत अच्छे हो तुम
उसकी कृति हो, अब तुम प्रमाण दो।
जिसने जन्म दिया क्या वो सोचता है कुछ ?
तुम जो भी कर लो उसके प्रिय समान हो।
स्वयं पर सिद्धि करो, जो सही लगे करो
मानो न मानो तुम सत्य का प्रमाण हो।
उसने बनाया है न, बुरा कैसे हो सकता है
किसने बनाया तुम्हें, इसका संज्ञान दो?
तुम ही कबीर हो, तुम ही रसखान हो
भीतर झाँक कर तो देखो, तुम ही ज्ञान हो ।।
कौन ? मैं ?
हाँ! तुम!

18-12-2024

अब नहीं !

वन उपवन में देख उसे आसक्ति प्रबल हुई
अनदेखा विवाह कर प्रीति सफ़ल हुई
कोई न जाना कैसे प्रेम की बेल बढ़ी
भोली भाली कन्या वेदी पर कब चढ़ी।

पुरुष महान सुगमता से भूल गया उसको
दिन दिन गिनती आयेगा बुलावा कल परसों
हुआ ज्ञात पिता को निष्कासित किया वन से
प्राण प्रिय पुत्री को यूँ ही भुला दिया मन से।

क्या किंचित सी बात पर पिता श्राप देता है ?
क्या मुद्रिका गँवाने पर पति भुला देता है ?
बात थी या था पिता का अहम् ?
मुद्रिका थी या थे पति के नियम ?

दर दर भटकी वो पति पिता की त्यागी
समझने लगी यूँ वो स्वयं को अभागी
दंड भोग रही थी वो एक भूल की मारी
पुरूषों पर थी आश्रित वो एक अबला नारी।

अबला ? ना ना ! बहुत सबला नारी है
जब माँ बनती है तब सौ पुरूषों पर भारी है
मुद्रिका के अभाव में भुला दिया राजा ने
रोती शकुन्तला को सहारा दिया इक माँ ने।

आयी माँ मेनका मिटाने उसका विषाद
शक्ति स्तंभ बन स्वर्ग लोक को ले गयी साथ
फिर न मिली किसी को वो आत्मसम्मानित नारी
स्मरण हुआ दुष्यन्त को जब भूल हुई ये भारी।

ऐसा विस्मरण, ये उपेक्षा, यूँ निरादर क्यों ?
वो मिथ्या प्रेम, वाक्जाल, वो प्रेमालाप क्यों ?
पत्नी के स्मरण को मुद्रिका होनी चाहिये ?
अब ऐसा दुष्यंत शकुन्तला को नहीं चाहिये
अब ऐसा दुष्यन्त शकुन्तला को नहीं चाहिये ॥

07-10-2025

भाग - 2
कुछ समझदारी
कुछ बचपना

पृथ्वी अम्बर

जिस तरह पृथ्वी ने दिया है
देखो सहारा अम्बर को
उसी तरह मेरे कंधे पर
आओ रख लो तुम सिर को।

मैं धरती जो बनूं
तुम नीला नभ बन छा जाना
अपनी सुगन्ध के झोंकों से
मेरे तरु पल्लव हिला जाना।

चाँद के कारण जल में
उत्थान पतन ज्यों होता है
मेरे हृदय की धड़कन में
तुम्हारा अनुराग होता है

देखो गगन किस तरह क्षितिज में
धरती का माथा सहलाता है
देखो रत्न प्रसविनी का चेहरा
नभ में कैसा छुप जाता है।

मैं भी इसी तरह से सजन,
धानी से चुनरी ओढ़ कर,
आ जाऊँगी तुम्हारे पास
सारे जग को पीछे छोड़ कर।

जैसे धरती और नभ हँसते हैं
वो दूर सब कुछ भूल
ऐसा ही हमारा जीवन होगा
खिलेंगे सब ओर फूल।

आओ ले लें शिक्षा
इन दोनों से हम कुछ प्रेम की,
अमर होगी ये प्रेम कहानी
लैला मजनू वेग की॥

22-02-1978

बादल

थक गया हो चलते चलते
जैसे पथिक कोई
रात में भी जैसे उसकी
आँख न हो सोई।

व्याकुल हो जाये दृष्टि
राह भटक जाने से
मार्ग न चुन पाये कोई
चौराहा आने से।

भटक रहा था वह बादल
सूने आकाश में
दर्द के सिवा उसके नहीं
पूँजी थी पास में।

असमंजसता, हैरानी
सीने पर था बोझ
साथी, बन्धु, स्नेही, प्रिय को
नयन रहे थे खोज।

सहसा हाथ पड़ा भाल पर
हिय ने ली सिसकी
फिर विलोचनों से वारि की
बून्द सहस निकलीं।

जब उदास एकाकी जलधर
हल्का करता मन था
हर्षित हो हाथ हिला हिय में
हँस रहा मनुष्य था।

निराला ढंग जगत का
देख न सका वह निश्चल
देख मनुष्य की स्वार्थता
लौट पड़ा उसी पल।

देखी नर की नरता
लखी उसकी निठुराई
मित्र घात लाज
उसे आज भी न आयी।

थाम लिये अश्रु उसने
चक्षु बंद किये
प्रेम नहीं उससे यदि है तो
बिन उसके नर जिये।

नहीं तरसा, नहीं हर्षा, नहीं बरसा
वह फिर कभी
भूख और प्यास से
मरने लगे जन्तु सभी।

घूम-घूम कर आता था वह
बिन बरसे ही चल देता
आशावान मानव हृदय को
सैंकड़ों वह बल देता।

देखा उसने बच्चों को
मरते और तड़पते
पाया उसने हर जन्तु को
अपनी ओर ही तकते।

सोचा उसने मुझमें और
इस नर में है अन्तर क्या फिर
भारी मन से उसी स्थान पर
फिरि आया वह बरसा फिर।

भावपूर्ण मानव हृदय, है
हार गया, फिर भी निश्चल
बुद्धिजीवी नर से आज
जीत गया है वह बादल॥

1979

गाती करूणा राग

निर्जन वन में डोल रही सखी गाती करुणा राग,
सोती रैना तू काली कह क्यूँ कर काटे जाग,
नभ सुप्त सोती धरा के ऊपर, सोती जैसे वात,
वन विहग विशाल जलधि सोये, सोती सारी रात।

गुलाब कपोल कोमल क्यूँ तेरे सरसों सम पीले,
पहले रहते चंचल ये नैना क्यूँ तेरे गीले,
परिधान आज है ढीला और हैं पग पड़ते ना सीधे
कह, कौन सी ऐसी बात सखी, जो है हृदय को बींधे।

ना छू मेरे हृदय को री मुझे छोड़ दे आज अकेली,
मत पूछ मुझसे आज क्यूँ तेरे संग मैं ना खेली,
हैं गये छोड़ मुझको निष्ठुर ना पूछा मेरा हाल,
सखी बोल काम के देव की अब कैसी है ये चाल।

हैं दूर फिर भी लगते हैं मुझको वो मेरे पास
हर जड़ चेतन में दिखते हैं वो, होती उनकी आस,
हर आहट पर चौंकूँ मैं, हर स्वर पर हो चेतन,
इस रजनी में लखे उन्हें मेरा यह चंचल मन।

बिखरे हैं उनके केश जो यह रात हुई है सुन्दर
मत कह मुझसे छोड़ इसे चलने को गृह के अन्दर,
अन्दर भी जो जाऊँ तो हर चित्र उन का दीखे,
शैय्या पर फिर स्वप्न में हैं नैना उनके तीखे।

फिर आता है मुहूर्त ब्राह्म का, क्यूँ, कौन कहता है ?
मुझसे पूछो तो कहूँ मुझे तो बस ऐसा लगता है
पलकें उन्होंने उठा कर है प्रकाश यह फैलाया,
थोड़ा सा मुस्कुरा कर है अधर सूर्य खिलाया।

लो हास्य की रेखा चंचल है चेहरे पर घिर आयी,
पंछी के कलरव में मानों वाचालता उतरायी,
उनके चलने के स्वर को हूँ जैसे धड़कन में सुनती,
उनके बोले शब्दों को हूँ फूलों में मैं ज्यों गुनती।

मुझे छोड़ गयीं सखियाँ प्रिय मैं हुई बहुत वाचाल,
लगता है वे भी ऊब गयीं सुन सुन कर मेरे हाल,
सच है कौन सुनता है दुख किस का आज इस जग में,
पर मेरे भी तो बसे हुए हैं प्राण प्रिय रग रग में।

11-02-1980

मानव होकर

हर चेहरे को परखा तुमने,
हर नज़र को है देखा,
हर चेहरे पर प्यार मिला,
हर नज़र प्रेम की रेखा।

प्यार भरे दो बोल मिले
प्रसन्नता हर मुख से
हर हाथ ने आशीष दिया
तुम रहो सदा ही सुख से।

उत्साहित हो कर तुमने
लिया करों को कर में
आगे बढ़ कर प्रेम सहित
झांका हर हृदय में।

ओह जितना गोरा मुख था,
दिल उतना ही काला,
जैसे बाहर से मन्दिर
हो अन्दर से मधुशाला।

जैसे नर्म अमरुद समझ कर
कोई दाँत लगाये
अन्दर का कोई सख्त बीज
आ दाँतों में फँस जाये।

पता न था ऐसा होता है ?
चलते में लड़खड़ाये
मानव हो कर मानव की
तुम माया समझ ना पाये ॥

10-03-1980

क्यूँ ?

बाहर से कुछ और अन्दर से कुछ
तो हमेशा पड़ा रहता ही है
कवियों ने दिये हृदय को न जाने नाम कोमल क्या
पर उस पर भी सख्त सा एक आवरण चढ़ा रहता ही है।

आँखों को दिया न जाने विशेषण कितना प्यारा है
कहीं बिजली, कहीं हिरनी, कहीं मछली, कहीं भँवरा है
पर चार्ट के सामने हाथ में बेंत लिये
आँख की जटिल रचना समझाता वैज्ञानिक खड़ा रहता ही है।

सुन्दर कितना भी फूल हो, चमेली या गुलाब हो,
बनता वह गंगाजल हो या बनता वह शराब हो
लम्बी सी टहनी के नीचे मिट्टी में दबा हुआ
खाद का कुछ अंश पुराना तो सड़ा रहता ही है।

क्यूं जलता है आदमी से आदमी पूछो उससे,
फिर भी क्यूँ दिखलाता है स्नेह वह पूछो उससे,
अन्दर मचा हुआ हो चाहे कितना भी कोहराम क्यूँ ना
पर ऊपर मुस्कुराहटों का मुखौटा तो चढ़ा रहता ही है।

10-03-1980

ये चाँद आधा

माँ के आँचल से झांकता बच्चे का मुखड़ा ये चाँद आधा,
किसी नृत्यांगना के सिर पर बंधा जूड़ा ये चाँद आधा,
किसी सुन्दरी के नेत्र पर झुकी पलक सा ये चाँद आधा,
कितना प्यारा है कितना सादा ये चाँद आधा।

रोते बच्चें के मुडे हुए होंठ सा ये चाँद आधा,
किसी विधवा की पुँछी हुई बिन्दी सा ये चाँद आधा,
किसी कंगाल के टूटे हुए सिक्के सा ये चांद आधा
ओह क्या क्या उपस्थित करता है बाधा ये चाँद आधा।

गोपियों को है कृष्ण के मुख सा ये चाँद आधा,
कृष्ण को है माखन का सुख सा ये चाँद आधा,
कभी लगे जमुना तट का पुष्प ये चाँद आधा,
कभी बन जाये प्रिय राधा ये चाँद आधा।

पूर्णमासी की आशा करते को ये चाँद आधा,
अमावस्या की इच्छा करते को ये चाँद आधा,
बिना तारों के दिन में आया ये चाँद आधा,
अरे कैसे तोड़ा करता है वादा ये चाँद आधा॥

09-04-1980

व्यर्थ

तुम से तो मैंने कुछ कहा न था
व्यर्थ तुमने क्रोध के अंगारे बिखेरे,
ढूंढे मेरी बातों में अनेकों बखेड़े
हृदय की छलनी में बातें छन गयीं
अश्रुओं के मिश्रण से सौगातें बन गयीं
मुझे तो याद था बीता कल आज भी
तुम्हें शायद न रहा आज तक आज ही
अपनी बातें तुम स्वयं तो सुन न सके
व्यवहार के जाले को स्वयं पर बुन न सके
जब मेरे ही शब्द तुम्हारे कर्णों को भाये ना
चेहरे के रंग तुम्हारी दृष्टि पर छाये ना
पीड़ा की वीणा के तार झनझनाये
पर गीतों के बोल मेरे तुम तक न आये
तुम्हें मेरी हालत का कुछ भी सिला न था
और फिर, तुमसे तो मैंने कुछ कहा ही न था ।।

07-03-1984

साथी

मुड़ कर तो देखो इधर
कुछ लोग ऐसे मिलेंगे
जीवन की पथरीली राहों पर
दुख पा कर भी संग चलेंगे।

तुमने ही छोड़ा था साथ
हमें तो अब याद नहीं
मगर तुम्हारे पीछे हैं
होने देंगे बर्बाद नहीं।

तुम्हारे हाथ का सहारा
मिल तो न सका कभी हमें
मगर कभी जब याद करो
तब के लिये यही कहें

जितना उदास होता है चाँद
उतना ही साथ आते हैं तारे
भले ही खुशी के दिनों में
तारों को चँदा बिसारे।।

27-02-1984

सावन

पेड़ बहुत खुश हैं खिल खिल के झूमते हैं
छमछमाती बारिश उनसे मिलने आयी है
फूलों पर जैसे सिंदूर बिखर गया है
सावन सलोना संदेसा लाया है
सूख गयी नदिया फिर बह चली है
बिरहिन सरिता हँस हँस नहाई है
नाविक की नाव चली सुरों से भरी हुई
किसान का खेत भी तो लहलहाया है
बच्चे अब खेल रहे ताली बजा के
कागज़ की छोटी एक नाव चलाई है
सास बहू बैठ गयीं साथ बतियाती
कढ़ाई में देखना तो घी चढ़ाया है
मन पंछी तक गा उठा कोयल की तान में
पर उस गीत में एक टीस उठ आयी है
मुझको मिल जाये जो सावन तो पूछूं
काकी का घर उसने क्यूं बहाया है ?

01-08-1984

निरुद्देश्य

जब सब इच्छायें मर जाती हैं
हम क्यूं जीते रहते हैं ?
रात आने पर दिन का छोर कस कर पकड़े
दिन आने पर रात के आँचल में छुप कर के
कल की ओर से आँखे मूंदे
कल से चिपके
ऐसा क्या है कल में, जिसे पकड़ कर लटके
अपने आँसू लम्बे करते हैं।
जो चाहा था मिला नहीं तब यादें कैसी ?
मांगा ना जो मिला वही फ़रियादें कैसी ?
मोती की इच्छा में खाली सीपी ले कर
ढूँढ-ढूँढकर
ऐसा क्या है इन सीपी में जिन्हें उठा कर
बारम्बार सजा रखते हैं ?
लहरों की धारा में बहक-बहक कर जाते
छोटे-छोटे तिनके भी गिन गिन कर पाते
अन्तहीन जलकुण्ड में डुबकियाँ लगा कर
तट को तकते
ऐसा क्या है इन लहरों में जिन्हें थाम कर
निरूद्देश्य बहते जाते हैं ?

19-11-1984

Part 2-(B)
From the Pen of a Teenager

True Friends

Friends are not who sing with you.
Friends are not who swing with you.
Friends are not who dance with you
Friends are not who glance with you
Friends are not who appreciate,
All the work done by you.

Friends are those who share with you
Friends are those who care for you
Friends are those who tell you good ways
Don't care for themselves, improve your bad ways
Friends are those who don't appreciate
Of your every work but tell the mistakes

So don't be led by pretty ways
Listen to all the stricty ways.

12-02-1978

Science

Look what wonders
Science has done
On the path of advance
Miles we have run.

We have pillows and cushions
And T.V. and Fridge
To cross a river
We have always a bridge

Man has gone in the space
Reached the moon
Started in the morning
Back till noon.

Questioned by computers
Answered by them
What is left for men
To do now then?

Telegraph and telephone
Radio and wireless
The houses of advanced
Are mostly a mess.

They listen to machines
They talk through machines
They fly by machines
They walk in machines.

They look at machines
They work with machines
I hope they don't
Turn into machines.

1978

How Long?

Out of his palace
At night he crept
While his dear child
And loving wife slept

A washerman inspired
A man to be cruel
He left his dear wife
Lonely in a jungle

Because of a dream
He sold his wife
Who had worshiped him
Throughout her life

Thus history can tell
About man's cruelty
His behaviour towards women
Still has no novelty

Centuries are lost
In the darkness of past
But looks his cruelty
Never will last.

Women have advanced
But not much freedom is given
Oh! How long will men
Rule over women?

1979

Poor Husband

Headache and backache
And legs ache and vein
When he is at home
Even her heart does pain.

No matter how tired
The piteous man be
Prepare your lunch
And prepare her tea.

Bring her a dress
Every third evening
Every single birthday
Every other visiting.

Ignorant is what
He is poor fellow
He is the loyal creature
Who blindly does follow.

Oh! Poor, poor, poor
Poor husband
Brings along worries
Happily with a band.

Sweating and earning
Is what he does in life
In office is his boss
At home is his wife.

If he is every angry
Then he is at a loss
For head of the family
The wife gets cross.

Gets out of the house
Lives in a tent
Poor, poor, poor
Poor husband.

1979

Comes

Again comes the rain,
Again dance the flowers,
Again flows the drain.

Smile evergreen leaves,
That happy contented tree,
What a sigh it heaves.

One by one come raindrops,
The dancing proud peacock,
By the female stops.

Comes spring, comes rain,
Winter, Summer, Autumn,
Then repeats the chain.

It's just like a queue,
Everything does come,
Do not come is you.

09-08-1979

Great Happiness

Think of life as a bliss,
For it is no less than this,
Money is what dreams make,
Realize it before you wake.
Lips just smile an’ smile,
Smiles as broad as a mile
Laugh as much as you can,
Laugh with your heart oh! Man,
Sing for life is a song.
Music can never be wrong
Don’t bear life as a burden,
It is a gift from heaven.
When cheerful heart stops deathly
Don’t think of life as a tragedy.

22-06-1979

Evil

Birds are happy, animals glad,
Children from one place to another run,
Earth is looking more beautiful than before,
Perhaps feeling proud of the rising sun.

Men are coming to their forgotten work,
Women smile, laugh and chatter,
Everyone wishes everyone good day,
Night has gone, what does it matter.

Poets admire the beauty of the moon,
Writers are happy they have something to write,
Painters are lost in their paints and brush
Such is the glory of the morning after night.

What a bird says to another perhaps,
Is whose is the big enchanting egg.
A childless says to another of the same,
Look at the heel of a child's pink leg.

A girl will say with dreams in her eyes,
It's the spot of a married woman's forehead
And a boy would mostly say to another,
It's the red round ball of the game of cricket.

But why, oh why, do they forget as they do,
Admire the sun stopping on their way,
That evil does not vanish so easily,
And dark night comes after every day.

06-01-1980

Let Me Listen

Silence prevailing far and wide,
Is urging me to speak so light,
So not to lose the silent fight,
Against the odds of life so tight.

Silence making me look at stars,
Is making me forget the daily wars,
Of busses horns and roars of cars,
Even the life's sweets and sours.

Silence is coming so silently,
I'm listening to it concentratly
Reaching the ear in waves so plenty,
Soothing my taxed nerves so gently.

Silence with moon and in the night,
With rising sun and dazzling light
With all so dull and all so bright,
Seems the only comforting, only right.

I dare not speak I dare not whisper,
I dare not write my thoughts on paper,
The end of silence will end a chapter,
Let me listen to it, Let me capture.

03-11-1980

All Around

This world is ever so noisy,
Around us why this noise,
That I can't even hear,
My own heart's voice?

What you are saying to me
Is perhaps to wipe my tears,
But the piercing cry of sadness,
Is all that I can hear.

My heart is fluttering itself,
Out of love for you,
With eyes full of hatred,
Third person is watching too.

And while I am composing
Poetry for peace of mind,
The thread of noisiest noise,
Around it who does wind?

Who comes speaking in my ear?
Who shrieks and shouts in my heart?
This world has gone all noisy,
Silence has got not a part.

Couldn’t the earth be flat?
Couldn’t the sky be left alone?
Couldn’t the stars be small?
Couldn’t the moon be which shone?

Couldn’t the horns be melodious?
Couldn’t the machines be musical?
I want just for a moment,
To sit in a peaceful mental.

16-03-1981

If All the Days Were......

If all the days were Sundays
I'll get up late in the morning
The school will open in vain
I'll have my breakfast in bed
And go to sleep again.

If all the days were rainy days
I'll get up early in the morning
I'll take a bath in the rain
Then dress up in my night dress
And go to sleep again.

If all the days were holidays,
I'll get up smiling in the morning
I'll write letters in a chain,
I'll post the letters the same day,
And go to sleep again.

29-09-1980

To Tree

Standing there so quiet
Smiling to the sky
Shading over the earth
Sheltering all birdii.

In your mind is what?
Your life started when?
You came here from where?
Standing here thus, why?

You see people coming,
You see people going,
Do you say ta-ta
To the passsers by?

Are you afraid to walk?
Are you angry with me?
Are you happy living here?
Or are you much too shy?

Show you have some life,
O, you centuries old,
Come along with me,
Just this once, try, try.

30-03-1981

A New World

One moonlit night in a romantic mood,
I and my sweet heart roamed round the town,
With dreams of a beautiful child in her eyes,
She said we'll have a child of our own.

It will be fair with black curly hair,
And large dark round naughty eyes,
Our future will be bright even if he smiles
Our life will be happiness even if he cries.

He will grow into a very fine man,
One way or the other he will serve his nation,
The country will be proud to have such a soul,
The world will praise us and our son.

Just then a cry reached our ears,
We turned around and searched in the dark,
A lonely child was woken by the birds,
And while the child cried a dog did bark.

Neither was he fair nor curly haired.
Nor was he round naughty eyed,
He looked a poor motherless soul,
Like a father less child he wept and cried.

I looked at my girl with a new thought,
And said while my arm round her curled,
Instead of giving this world a new child,
Can’t we give this child a new world?

01-05-1981

Shall I Go?

Such a dark cloud,
high & up
The blue sky above,
far & wide
The setting sun
yellow orange
The width of the rays,
shining bright
All seem to be calling me.

The flying birds,
happy & gay
The hopping ones,
passing by
The mother father
looking for food,
While the little ones,
try to fly,
All seem to be calling me.

The garden's greenery
grass & leaves,
The flowers and buds
petals yellow,

With beautiful butterflies,
flying above,
And grasshoppers hopping
right below,
All seem to be calling me.

The plants all over
small and large,
At daytime call
when day is gone,
The sun did call me
come to me
The stars did so
as the moon shone
Yet I seem to be alone.

My heart beats faster
every minute,
My mind registers the
urge to go,
My ears are strained
for calls from nature
My eyes are bright
but sweating my brow.
For shall I go?

15-09-1981

On The Seashore

O beautiful red Sun,
They say you are so hot,
Yet the world is happy when you are there,
All goes black when not.

O floating white wave,
They say you are so rough,
Yet you bring ashore such treasures
Which otherwise to search is tough

O delicate, flexible fish,
They say you are so dirty,
Yet you provide to the deep ocean,
An unending, unforgettable beauty.

O brown, large rock,
They say you are so hard,
Yet you protect the sea till the end,
Though in time it breaks your guard.

This world is hard and cruel,
It never praise any one,
You have done so much for it,
For you, tell, what it has done?

Sun is going behind the clouds,
Waves are going away from shore,
Fish are going under the sea,
In time the rock will be no more.

You are sad, I understand,
Your and mine are same feelings,
You bring such beauty to the world,
But it is so ugly in its dealings.

It’s better to leave, go your way,
Let it struggle itself through,
Pray, don’t leave me lost and lonely,
Oh, do, do take me with you.

21-06-1982

At Midnight

I can’t write
I have tried and tried
But I can’t write
I don’t have feelings,
I don’t have expressions,
I don’t have words,
And if sometimes,
I do feel something.
The dictionary is too small
To express it right.
So, I can’t write
But in this age and day
In this modern world,
To feel is abnormal,
I am supposed to be normal.
So I keep my feelings local,
Love is backwardness.
Pity is unsmartness,
Jealousy,
The only true emotion.
Or be indifferent,
Self-sufficient,
Non-reliant
I love that weeping child.
I sympathise with that blind man,
I have to help that old pearl.
Oh you nonchic, nonslick girl,

How come you born in this world?
Yes let them go to air.
But, I do care, I do care.
That's an unhealthy emotion,
I tell you do it shun,
Why look at the darkness?
Just live in the light
And because of this dazzling light,
I can't think, I can't write.
I wish I could be a computer.
Just do my work but never think,
Just gaze at all but never wink,
Just know of all but never link,
Just pour it out but never drink
Then I wouldn't be in this state so tight.
Lying in the mid of night,
Composing and thinking, unable to write.
Why?
'cause it's mid of night,
Dark is deep, all asleep.
If I put on the light
And take my thoughts' thread,
Every one will say,
Am I crazy in my head?
I can't sleep but I can't
Disturb in the middle of the night.
So I can't write.
It is so negative.
Why not be a bit positive?
But is anything positive today?
Is anything happy and gay?

Is anything it used to be the way?
When poets got solace in nature.
But nature has changed for us.
Sun is getting hotter every day.
Earth is shrinking way by way.
Because we have changed for it too.
I plant a bud he plucks the flower,
And throws it, of all the things,
Under a running car.
Yes, world is of cars, engines and planes.
Not of verses,
Everyone is running,
Without thinking, without feeling.
Oh don't delay us,
With a thing so slight,
So I can't write,
I can't write negative
Its not at all keen,
I can't write positive,
Its nowhere to be seen
I can't write tragedy,
Its so sad, such a cry,
I can't write comedy,
Its such a white lie.
I don't want to be humble
Its not in keeping with this world,
As well I don't want to show pride,
So, I can't write, I can't write.
It's the end,
I know,
It's the end of feelings and emotion,

But a good starting, I have this notion,
For my future fight,
So, I won't write
No, I won't write.

17-09-1982

All Important

Marriage is not the all important,
Nor is the waiting for a lover,
Neither are the degrees so important,
Nor is important a money shower.

What then tell is important
If not the mentioned aims?
Is not achieving a handsome suitor
The secret desire of all the dames?

Is not the degree all important
For studious, ambitious scholars?
Is not the music of paper and metal,
The best for a money roller?

Say what after a life settlement?
What will one do of degrees?
What can so much money bring,
Except some painful miseries?

Love! A useless, worthless thought,
Study! A boon, yet aimless study,
Is often or more as wasted
As accumulation of unused money.

None lives only to read,
None to get a beautiful wife,
None should make the worldly goods,
The sole theme of spending life.

Some live for earth and oceans,
Some live for moon and stars,
Some live for birds and animals,
Some live for tanks and cars.

Some live for purity of soul,
Some live for truth and lie,
Tell which is most important of all,
When all of us live to die?

21-10-1982

I Apologize

Yes, I owe you an apology,
If you will but excuse,
Think not because of my words,
That, Madam, I am of no use.

I had been silent for long,
What you said was interesting.
I stood up to say all,
I said it without thinking.

And that's a sin in itself,
To comment and to think not,
As such I must say,
I owe an apology to thought.

A pair of eyes and ears,
Does not betray us so,
As does a single tongue,
Much mischief does it do.

To speak without a mind,
Is an antisocial deed,
Hence to the society too,
Should my apology plead.

Society is our part,
And we as its part live,
For it should we form,
And to it should we give.

Work for the benefit of others,
Is what my life tells,
But what I feel is, I owe,
An apology to life itself.

The outer covering of man,
Smells his heart onion.
But the innest peel of each,
Like mine must wish have one.

To grow some flowers for others,
Save them from winds and crushes,
As I wish unfruitfully,
I owe an apology to wishes.

I am sorry to have opposed you,
Ashamed of the empty head,
Lament to form this society,
Of wishes I am in debt.

We are sent here with aims,
Work is life's substance,
My life's futility makes me,
Apologize to my very existence.

21-01-1983

And Now I Go

(Dedicated to my college and teachers)

Here you stand O silent building.
Here I stop on my long long journey,
An enlightening radiance is around you,
No silent place are you for me.

I've communicated with you I feel,
Grumbled to you, consoled by you,
You taught me and I learned from you,
Excited by you, controlled by you.

To your rooms I came as a fool,
In your chairs I sat to brood,
Here I wisened my little thoughts,
Here I sharpened my brain crude.

You gave me inspiration to work,
You told me the motives of life,
You made a human out of me,
You sharpened the stone with a knife.

I found the friends to share happiness,
Found the adults to show me the way,
All my arguments were patiently heard,
My problems calmly solved away.

Oh, I got so much from you,
How can I tell you what is it?

Can I ever repay in any way?
Happy be my soul if I did even a bit.

Today I go forever from you,
How much it means if only you knew,
So many come to you every year,
But for me there is only you.

I came here feeling so confused,
I had indeed a lost reason,
I go out feeling confident and sure,
I am certainly a better person.

I wish I could stay on and on,
But moving on is essential for living,
It is only your greatness,
You stand there forever giving.

Looking at you with more admiration,
And the people with more respect,
Had you not been there for me,
My soul and mind who would then connect?

Who would have been my guiding star?
Who would have been my warming sun?
My imagination fails me when I ask,
What person would I have been then?

23-01-1983

The incomplete story of.....
The Haunted House

The sound of our feet was the only one,
Matching our steps as we three went,
Into the dark, wide mouth of the night,
Suddenly the road came to be bent
To a house we had our eyes all glued,
From where he had left, he continued.

“Yonder you see that house in wrecks?
There he and I had stopped for a breath,
We had been running for a long way,
Behold that tree we stopped underneath.
For morning pleasure we had both gone,
Not a bird chirped, the moon still shone.”

“I know as much”, I said in low voice,
“What happened afterwards when you saw the house?”
We had heard the house was haunted from long,
Who went did not come, nor man, nor mouse,
He said he himself had seen a ghost there,
We believed not and now he had brought us here.

My younger brother had the hold of my hand,
His heart a terror, my heart a tremble,
But on the surface we were one as fearless,
Fear and fearless were causing a jumble.
I tried uselessly to keep the terror out,
Hence the low tone, not the usual shout.

He sighed, with it my breath stopped,
He moved, with it I ceased to walk,
“Under the tree, sis, we stood a moment,
Loth to chat and scorn to talk,
And as I moved my head to the brick,
I sincerely believed my eyes to trick.

I imagine it now as first I heard a sound,
I heard it myself, I tell the truth,
There was my friend with me you know,
If you disbelieve me, you ask the youth,
I heard and saw from under the tree,
“And I heard, Oh I heard, and what did I see?”

“What did you see?” I could not ask,
My voice in my throat just strangled,
The trees were making the eeriest sounds,
I heard them and saw the branches dangled,
And All around me were closing the hills,
The cold windy night was sending chills.

The long twisting road lay as a snake,
The devil in my mind was getting naughtier,
Conjuring up visions I did not like,
And yet, I tried, to smile at my brother,
To imply I wasn't frightened by his words,
Although my internal fluttered like birds,

"At first", he said, "I heard a groan,
As if some one laugh and tears mixed,
Then a zooming sound, I looked at my friend,
My surprise! I found his eyes transfixed,
I turned and saw a grinning man there,
He had no cheeks, his eye sockets bare."

Zoom! Came the wind pulling my ears,
"Haaa", it said and whistled and "Eeek",
It danced along on the road to the hills,
Accompanying it was indeed my shriek,
I clutched at the younger, he clung for shelter,
I to him, he to me, we both to the elder.

We hid as if he would fight the ghost,
He in his turn laughed his fill,
Our senses were numb he laughed unheard,
"Fools," said he, and laughed on still,
We hid, he laughed, he laughed, we hid,
Until our senses started to, a bit.

Now I heard the laugh beside me,
And knew the wind had teased our nerves,
It had frightened us out of our wits,
Now it had vanished around the curves,
Again, the laugh, my heart burned,
With anger on my face, to face him I turned.
With anger I turned to face his laughter,
And told him he was no better than a ghost,

Our hearts had all but stopped in terror,
Indeed at night it was ghastly to boast,
"You laugh? You think we can't go alone?
We're fearless," though we were frightened to the bone.

"Come younger," I said and started and jammed,
I started and stopped and started and froze,
In trees I was sure I discerned the witches,
From hills no doubt the giant horrors rose,
Turning, my eyes on the grinning brother fell,
At the time he was the grinning ghost himself.

"I am going back to him", younger said,
Took leave and took my courage with it,
Now there were two ghosts grinning at me,
Yet I was loth to accept defeat.
"I am going", I said, "I am going, going,"
Still they smiled and winked to the wind blowing.

.....Incomplete....

25-01-1983

Wounded

A piece of soft clay,
Happy and contented,
Enjoying the elements,
Yielding and moulding,
Friendship's aspirant,
Lets itself be pressed
By your two feet,
At the side of a high street,
You press and repress,
Extracting the last piece of softness,
Until it no more can friendship mock,
And turns it's heart into a hardened rock.
But it does not move,
It is satisfied in it's place,
Looks down upon you but with grace,
You don't like that either,
This rock sits above you higher,
Even the wind around you is jealous,
It pulls and pushes against
Its new found strength,
Until at last defeated,
It rolls down anew,
And then you say,
It hits you.

05-10-1983

For A Smile

I lose again,
Again I have hopes,
I lose again,
I pick a twig here,
I pluck a leaf there,
Mixing with the sweet scented earth,
I make a beflowered room,
Where dream gives birth to smiles,
Fathered by hope and
Delivered by optimism.
I prepare the baby cots
With the most delicate petals of the
Most beautiful flower.
On the stem sits the proud mother,
Not knowing that a wind is
Just starting outside.
Oh! To foresee,
That such tenderness
And such loving beauty
Will be destroyed.
And then to see it perish
In the unreasonable storm,
Oh to see the twigs of my dreamland,
Flying from me,
Oh to see my dreamlings
Hopelessly dying.

One by one the loss of nurses,
One by one the breaking of cots,
Dream the miserable mother,
Hiding her little ones under her arm
Is running this way and that
Crying for help
But hope is not there
He is trying to save his first born,
Who needs sustenance.
From the mother who is not near.

This chaos I watch,
And know,
That I am losing again
Oh the storm! Why?
And now it has gone,
And I have lost again.
Where are the flowers?
Where are the twigs?
Where are the littles?
Where are the bigs?
Even the remnants are not there,
For me to bury them,
There even had not been time,
To give each one a name.

Then,
Something in me,
My self,
My soul,
Tells me,
That I lose again but again I have hopes,
And I pick a twig here,
I pluck a leaf there,
On the sweet scented earth.
I make a beflowered cottage,
For my dreams,
For my hopes,
For my smiles.

22-11-1983

There Are Faces I Love

There are some faces I love,
I want to kiss them,
And put my arms around
The necks they possess.
Only to know,
They have no necks at all,
No shoulders I can hang on,
No cheeks I can kiss.

In fact they are not faces at all,
Only masks,
Smiling and cold,
With just five senses,
Masks upon masks,
Masks yet upon masks.
Here, there and there,
With a different tilt
To every artful lip,
My love hangs in air,
Fluttering like a bird without nest,
Without food, without water, without rest,
Searching for a sixth and a seventh sense,
A face with feeling and understanding.

Tomorrow, I know,
It will come back to me.
To conceal itself in my heart,
Not ever to come out again,
On seeing any face,
And then I will smile.
On gazing into the mirror.
And now finding there too,
Another face turned into a mask,
With masks upon masks,
And masks yet upon masks.

16-12-1983

Love Flower

I once sowed a small seed of love,
Watered it, cared for it, waited for it.
Until it grew into a pretty bud,
Concealing a fragrant dimension in it,
Rising to reveal the rainbow within,
Shining with the moon's serene smile,
Prancing with the stars impish twinkling
Humming and urging all with it to sing.
Until one day
A little more than half open
It ducked low to avoid,
Too near a nose
A hand too close,
Then started a long affair
Of wind, thunder and unfriendly lightening
The flower yet trying to postpone the fighting.
Smiled for them to ease down the anger
Sang a lullaby to drowse the canker
Yet the insects came to quarrel
With all the leaves leaving the laurel.
It started drying up inside
First the stem, then the sepals.
There still were the undefeated petals
With dew drops hiding the inner desert
Still the rainy rainbow hues

Veiling the colurless barren emotions
Still the flying faint fragrance
The sad happiness, the demolishing creation
The dumb song,
But for how Long?

17-02-1984

Tear of Broken Hopes

Tear of broken hopes
Soother do not leave me
A dreamless futureless heart
Needs your precious company

Be a kind loving pet
A true friend in distress
Be a very wifely wife
A rare faithful mistress.

Make my eyelids heavy
Let me fall asleep
Be a bed for my dreams
Soft and smooth and deep

Like a dame at her window
In my lash sit unspotted
Who fears crossing the bound
Lest return is not accepted.

Be an ever clever sleuth
Hiding documents and a chart
Be translucent to the world
Show nothing of my heart

All this and much more
You are much more still
But if you come self pitying
Squeeze you out I will

Then will you slide my cheek
Tickle my nose, grace my lip
Bathe my chin, wash my neck
Into my heart you will dip.

17-09-1984

Had I been Keats

I feel I understand your melancholy.
Sometimes I think my happiness would pass.
This moment would pass, what then?
This feeling would pass, what then?

Life will again be the same as before,
Or life will not always be the same.
Situations will change, what then?
Atmosphere will change, what then?

Sometimes I enjoy my thoughts so much
That a new thought brings a sharp pain again
When thoughts desert me, what then?
When the joy deserts me, what then?

A laugh is short, a tear is small,
Meetings end, love's ache satiates,
When excitement is gone, what then?
When novelty is gone, what then?

When the evening ends, what then?
When the day is spent, what then?
When the goals are achieved, what then?
When the life is lived, what then?

I too could have written,
‘An ode to Melancholy
Had I been you, Keats,
Sometimes I feel I understand,
Your melancholy inside me.

22-09-1985